क्रांतिकारी कम्युनिस्ट लीग, भारत के बारे में

क्राकली भारत का गठन 1991 में उन लोगों ने किया था जिन्होंने खुद को 1990 के उत्तरार्द्ध में भाकली (माले) से षड्यंत्रकारी तरीके से अलग कर लिया था। इसके नेता प्रकाश थे और वे ही मुख्य षड्यंत्रकारी भी। इन्होंने खुद को षड्यंत्रकारी तरीके से अलग करने के लिए 1989 की फूट के षड्यंत्र-प्रतिषड्यंत्र का हवाला दिया। संगठन में षड्यंत्र-प्रतिषड्यंत्र की थीसिस को हम बहुत पहले 2002 के अपने सम्मेलन में ही नकार चुके हैं और यह कह चुके हैं कि षड्यंत्र का मुकाबला प्रतिषड्यंत्र से नहीं बल्कि राजनीतिक-सांगठनिक तौर पर उसूली आचरण से करना चाहिए। 1989 के प्रतिषड्यंत्र में प्रकाश की बेहद गर्हित भूमिका थी जो कुत्सा प्रचार तक सीमित नहीं थी बल्कि झूठ-फरेब तक भी जा पहुंची थी।

1990 में अपनी षड्यंत्रकारी फूट को जायज ठहराने के लिए प्रकाश एण्ड कम्पनी ने जो दस्तावेज जारी किया उसमें संगठन के विकास का सारा श्रेय प्रकाश को दिया गया तथा सारी कमियों की जिम्मेदारी का. रामनाथ के सिर मढ़ी गई (इसी के साथ रवि सिन्हा पर भी)। नायक-खलनायक की इस प्रस्तुति में सही लाइन के प्रस्तोता हमेशा प्रकाश थे जबकि गलत लाइन के रामनाथ (और रवि सिन्हा) खासकर का. रामनाथ की गलत सांगठनिक लाइन को, स्वेच्छाचारी-अनौपचारिक कार्यशैली को निशाना बनाया गया। पार्टी संगठन में कमेटी व्यवस्था की जोर-शोर से वकालत की गई।

इन सब बातों के बाद उम्मीद की जाती थी कि प्रकाश एण्ड कम्पनी अपने पार्टी संगठन की एक सम्मेलन द्वारा औपचारिक स्थापना करेंगे। इसके राजनीतिक -सांगठनिक दस्तावेज जारी करेंगे तथा पार्टी संगठन में जरूरत के अनुसार विभिन्न स्तर की कमेटियों का गठन कर उसके द्वारा उसका संचालन करेंगे। कम से कम वे का. रामनाथ के 'केन्द्रीय संगठनकर्ता-अन्य संगठनकर्ता या 'एक सदस्यीय कमेटी व्यवस्था' के मॉडल का अनुसरण नहीं करेंगे। लेकिन नहीं। यह साबित करते हुए कि फूट के दस्तावेज में उनके द्वारा लिखी गई बातें फर्जी थीं तथा इस दस्तावेज को कूड़े की टोकरी में डालते हुए उन्होंने 1990 के दशक के उत्तरार्द्ध में अपनी सर्वोच्च कमेटी-केन्द्रीय सांगठनिक कोर (प्रॉविजनल) को भंग कर केन्द्रीय संगठनकर्ता और अन्य संगठनकर्ता का मॉडल अपना लिया। संगठन के औपचारिक संचालन का तो आलम यह है कि अपने अस्तित्व के पिछले चौबीस सालों में इसने न तो कोई पार्टी सम्मेलन किया और न ही कोई पार्टी दस्तावेज जारी किया है। (1990 के फूट के दस्तावेज को छोड़ कर) इस संगठन का नेतृत्व क्रमशः प्रकाश की परिवार मंडली के हाथों में जाता गया और लम्बे समय से इसी परिवार मंडली के हाथ में है। अपने को कम्युनिस्ट क्रांतिकारी कहने वालों की यह अद्‌भुत सांगठनिक लाइन और कार्यशैली है।

मानो इतना ही काफी न हो, प्रकाश एण्ड कम्पनी ने 1990 के दशक के मध्य से क्रमशः 'सर्वहारा पुनर्जागरण और प्रबोधन' की लाइन प्रस्तुत की जो नये दशक की शुरुआत में मुकम्मल हो गयी। इस आज के कम्युनिस्ट आंदोलन का मुख्य कार्यभार घोषित कर दिया गया। इस 'सर्वहारा पुनर्जागरण और प्रबोधन' का असल आशय मजदूर वर्ग की क्रांतिकारी लामबंदी के अत्यंत कठिन काम से पलायन कर पेटी बुर्जुआ बुद्धिजीवियों में साहित्य-कला की सुविधाजनक और आत्मतुष्टिपरक गलचौड़ करना था। इसे यदि मुनाफे के व्यवसाय का रूप दिया जा सकता था तो और भी अच्छा था और वास्तव में यही किया गया। 'सर्वहारा पुनर्जागरण और प्रबोधन' के नाम पर किताबों का प्रकाशन और वितरण प्रमुख काम बन गया। यही इनका धन्धा बन गया। ये कम्युनिस्ट क्रांतिकारी से धंधेबाज में रूपान्तरित हो गये। मजदूर वर्ग में इनकी छिटपुट प्रचारात्मक गतिविधियां धन्धे में झोंके गये कार्यकर्ताओं को भुलावे में रखने के लिए ही की जाती थीं। केवल 2008 से जारी इनके भीतर तीव्र असंतोष और टूट-फूट तथा अलग होने वाले लोगों द्वारा इनके धंधे पर तीखे ढंग से उठाये गये सवालों के दबाव में ही इन्होंने मजदूर वर्ग में अपनी गतिविधियां कुछ बढ़ाई।

प्रकाश एवं उनकी परिवार मंडली यदि केवल धन्धेबाजी तक सीमित रहती तो भी गनीमत थी। लेकिन इनके तो मानो मुंह में खून लग गया था। इन्होंने हर तरीके से सम्पत्ति इकट्ठा करने के लिए सारी हदें पार कर दीं। इन्होंने पूर्णकालिक कार्यकर्ता बनने वाले साथियों की सम्पत्ति हड़पी, इन्होंने अंशकालिक कार्यकर्ताओं की सम्पत्ति हड़पी तथा समाज में कुछ कमजोर किन्तु सम्पत्तिवान लोगों की भी सम्पत्ति हड़प ली। सम्पत्ति हड़पने के प्रयास में होने वाले झगड़ों के कई मुकदमे इनके ऊपर चल रहे हैं। इस प्रक्रिया में प्रकाश एवं परिवार मंडली क्रमशः एक लंपट गिरोह में रूपान्तरित होती गई और अब यह प्रक्रिया पूरी चुकी है। अब क्रांति की इनकी बातें और समाज में इनकी गतिविधियां इस लंपट गिरोह के धन्धे के लिए आवरण मात्र हैं या इसलिए हैं कि इनके द्वारा नये आदर्शवादी नौजवानों को धन्धे में खींचा जा सके। वास्तविकता जान लेने पर ये नौजवान इन्हें गाली देते हुए अलग हो जाते हैं जबकि ये बाकी लोगों को अपने साथ सुदृढ़ करने के लिए उनके साथ लंपट तरीके से पेश आते हैं।

2001 में जब अभी इनका पतन इस हद तक नहीं हुआ था। तथा 'सर्वहारा पुनर्जागरण और प्रबोधन' के नाम पर इनका धन्धा अभी शैशवावस्था में था, हमने भाकली (माले) के अन्य दो धड़ों के साथ इन्हें भी एकता का प्रस्ताव दिया था। जहां दो धड़ों ने हमसे कम से कम एक चक्र की वार्ता की, वहीं इन्होंने हमारे प्रस्ताव का लिखित तौर पर जवाब भी नहीं दिया। हमारे द्वारा बार-बार दबाव डाले जाने पर इनके प्रतिनिधि मौखिक तौर पर गोल-मोल बातें करते रहे। अंततः बहुत घेरे जाने पर ये बात करने आये लेकिन बैठक में उनके प्रतिनिधियों ने बताया कि वे एकता वार्ता के लिए नहीं बल्कि यह बताने आये हैं कि वे हमसे एकता वार्ता क्यों नहीं करना चाहते। जो बात उन्होंने कही उसका कुल मिलाकर आशय यही था कि वे हमारे संगठन को एक संदिग्ध चरित्र का संगठन मानते हैं। क्यों? उनकी गोलमोल बातों से यही मतलब निकला कि वे उम्मीद कर रहे थे कि 1998 की फूट के बाद हम उनका नेतृत्व स्वीकार कर

उनके संगठन में समाहित हो जायेंगे (क्योंकि उन्होंने हमसे पांच-छः साल पहले का. रामनाथ पर वही सवाल उठाये जो बाद में हमने उठाये)। ऐसा न करने के कारण हमारा चरित्र संदिग्ध हो गया। वे यह भूल गये कि हम 1990 से ही प्रकाश एण्ड कम्पनी को फूट (वह भी षड्यंत्रकारी तरीके से फूट) के लिए जिम्मेदार मानते रहे हैं। ऐसे में उनका नेतृत्व स्वीकार करने का कोई सवाल ही नहीं था। हां, नये सिरे से उनसे एकता वार्ता की जा सकती थी और हमने यही किया था।

उनके साथ हमारी एकता के प्रयास ने एक अद्भुत परिणाम निकाला और उसने एक संगठन के तौर पर प्रकाश और परिवार मंडली की वास्तविक मंशा को उजागर कर दिया। उन्होंने 2003 में घोषित कर दिया (वह भी अपनी जन पत्रिका और अखबार में) कि जिसे भारत में क्रांतिकारी शिविर कहते हैं वह मूलतः और मुख्यतः विघटित हो चुका है। इस शिविर के सभी संगठनों के नेतृत्व का संघटन अब क्रांतिकारी नहीं रह गया है। इसीलिए इन संगठनों के बीच एकता वार्ता और एकता से देश में एक अखिल भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी का गठन नहीं हो सकता। ऐसी अवस्था में उन्होंने अपने पार्टी संगठन के लिए पार्टी निर्माण का कार्यभार प्रमुख घोषित कर दिया। इसका मतलब यह था कि अब देश में क्राकली, भारत ही एकमात्र कम्युनिस्ट क्रांतिकारी संगठन रह गया है। अब इसके अपने विकास और दूसरे संगठनों के कार्यकर्ताओं के इसमें आ मिलने से ही देश में एक अखिल भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी का गठन होगा।

अपने को देश का एकमात्र कम्युनिस्ट क्रांतिकारी संगठन घोषित करने की यह कवायद असल में धंधेबाज लंपट गिरोह में रूपान्तरण का अहम पड़ाव था। केवल इसके जरिये ही वे अपने गैर कम्युनिस्ट या कम्युनिस्ट विरोधी आचरण को जायज ठहरा सकते थे और अपने ऊपर उठते सवालों से खुद को बचा सकते थे। यदि देश में कोई अन्य कम्युनिस्ट क्रांतिकारी संगठन है ही नहीं तो अन्य संगठनों द्वारा उठाये जाने वाले सवाल स्वतः ही निरर्थक हो जाते हैं। इससे प्रकाश और परिवार मंडली द्वारा कार्यकर्ताओं को झूठे अहंकार में मदहोश कर उनसे उद्वत और लंपट गतिविधियां करवा सकना संभव हो गया।

प्रकाश एण्ड कम्पनी का क्रमशः प्रकाश और परिवार मंडली में रूपान्तरण तथा उसका एक धंधेबाज लंपट गिरोह में पतन हवा में नहीं हुआ है। इसकी जड़ें प्रकाश के झूठ-फरेब से भरे व्यक्तित्व में तथा निष्क्रिय उग्र परिवर्तनवाद की उनकी लाइन में है जो 1980 के दशक में ही पर्याप्त मात्रा में उजागर हो गयी थी। 1990 की षड्यंत्रकारी फूट के समय ही उनके ऊपर परिवार के इर्द-गिर्द इंकलाब की मंशा पालने तथा रुपये पैसे के मामले में संदिग्ध आचरण के आरोप लगे थे। वस्तुतः 1990 में हमारे पक्ष द्वारा यही बात कही गयी थी कि गंभीर रूप से इन सवालों के उठने के कारण ही इनसे बचने के लिए प्रकाश ने षड्यंत्रकारी तरीके से संगठन में फूट डाल दी।

बाद के समय में जब प्रकाश एण्ड कम्पनी प्रकाश और परिवार मंडली में रूपान्तरित हो गई तो इन पर कोई भी अंकुश समाप्त हो गया और उसके क्रमशः पतन का रास्ता साफ हो गया। पहले धंधेबाज और फिर धंधेबाज लंपट गिरोह बनने के रास्ते में काई बाधा नहीं रह गई। मूल प्रवृत्तियां फल-फूल कर विशाल वृक्ष बन गईं।

अपनी पैदाइश के समय से ही आपादमस्तक निष्क्रिय उग्र परिवर्तनवाद से ग्रस्त एक छोटे संगठन का, जिसका नेतृत्व झूठ-फरेब करने वाले व्यक्ति की परिवार मंडली हो, यह पतन आज के दौर में कोई अनहोनी घटना नहीं है। पिछले चार-पांच दशकों से विश्व कम्युनिस्ट आंदोलन और अपने देश के कम्युनिस्ट आंदोलन में टूट-बिखराव तथा विचारधारात्मक विभ्रम का जो माहौल रहा है उसमें कम्युनिस्ट क्रांतिकारी संगठनों का पतन एक गंभीर प्रवृत्ति बन गई है। अपने देश में ही नक्सलबाड़ी से निकले कई संगठन पतित हो चुके हैं। कुछ तो खुल्लम-खुल्ला संशोधनवादी हो गये हैं। राजनीतिक पतन के साथ इनके नेताओं-कार्यकर्ताओं का व्यक्तिगत पतन सामान्य बात है। पूंजीपति वर्ग और साम्राज्यवादी इस राजनीतिक और व्यक्तिगत पतन के लिए लगातार प्रयास कर रहे हैं, दबाव के साथ सुख सुविधाओं का लालच दिखा रहे हैं।

हमारे संगठन ने क्राकली, भारत के क्रमशः पतन के खिलाफ लगातार संघर्ष चलाया। 'लाल सलाम' के विभिन्न अंकों में प्रकाशित चार लेख-'इतिहास के कुछ और कार्यस्थगन प्रस्ताव', 'भारतीय क्रांति के सांचो पांजा', 'वामपंथी बड़बड़ियों की गड़बड़ियां' तथा 'फुटलूज क्रांतिकारियों के फुटलूज सिद्धान्त', जो 2003 से 2012 के बीच प्रकाशित हुए- इस बात के प्रमाण हैं। परन्तु इस संगठन के पतन की आंतरिक गति इतनी मजबूत थी कि हमारे और अन्य संगठनों द्वारा इनके खिलाफ चलाये गये संघर्ष इस पतन को रोक नहीं पाये।

अब, जबकि क्राकली, भारत एक धंधेबाज लंपट गिरोह में रूपान्तरित हो गया है तथा अपनी गतिविधियां इसी के अनुरूप संचालित कर रहा है, तब इसके साथ केवल एक ही तरीके से पेश आया जा सकता है। यह वही तरीका है जिससे कम्युनिस्ट क्रांतिकारी समाज के लम्पट तत्वों या लम्पट गिरोहों से पेश आते रहे हैं।

■■■